विकासकी अवस्थाएँ : शैशवावस्था

STAGES OF DEVELOPMENT : INFANCY

"The little human being is frequently a finished product in his fourth or fifth year "

-Freud (p 298)

शैशवावस्था : जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल

(**INFANCY : THE MOST IMPORTANT PERIOD OF LIFE**)

शैशवावस्था, बालक का निर्माण काल है। यह अवस्था जन्म से पाँच वर्ष तक मानी जाती है। पहले तीन वर्ष पूर्व शैशवावस्था और तीन से पाँच वर्ष की आयु उत्तर शैशवावस्था कहलाती है। न्यूमैन (J.Newman) के शब्दों में-"पाँच वर्ष तक की अवस्था शरीर तथा मस्तिष्क के लिये बढ़ी ग्रहणशील होती है। फ्रायड के शब्दों में-"मनुष्य को जो कुछ भी बनना होता है, यह चार पौच वर्षों में बन जाता है।

बालक के जन्म लेने के उपरान्त की अवस्था को शैशवावस्था कहते है। यह अवस्था पाँच दर्ष तक मानी जाती है। नवजात शिशुओं का आकार 19-5 इंच, भार 75 पॉड होता है। वह माँ के दूध पर निर्भर करता है। धीरे-धीरे यह आँखें खोलता है। उसका सिर धड़ से जुड़ा रहता है। बाल मुलायम एवं मौसपेशियों छोटी एवं कोमल होती है। जन्म के 15 दिन बाद त्वचा का रंग स्थायी होने लगता है।

नवजात शिशु क्रन्दन करता है। इससे फेफड़ों में हवा भर जाती है और उसकी श्वसन क्रिया आरम्भ हो जाती है। स्तनपान के कारण उसमें चूसने की सहज क्रिया प्रकट होती है, वह भूख के समय रोता है। वह 15-20 घंटे सोता है। धीरे-धीरे उसमें ये परिवर्तन स्थायी होने लगते हैं ।

बीसवीं शताब्दी को "बालक की शताब्दी कहे जाने का कारण यह है कि इस शताब्दी में मनोवैज्ञानिकों बालक और उसके विकास की अवस्थाओं के सम्बन्ध में अनेक गम्भीर और विस्तृत अध्ययन किये। इनके फलस्वरूप, वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सब अवस्थाओं में शैशवावस्था सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। उनका कहना है कि यह अवस्था ही वह आधार है, जिस पर बालक के भावी जीवन का निर्माण किया जा सकता है। इस अवस्था में उसका जितना ही अधिक निरीक्षण और निर्देशन किया जाता है, उतना ही अधिक उत्तम उसका विकास और जीवन होता है।

को व क्रो के अनुसार-"बीसवीं शताब्दी को बालक की शताब्दी' कहा जाता है। "The twentieth century has come to be designated as the century of the child." Crow and Crow : Child Psychology, p. 4.

शैशवावस्था के महत्त्व के सम्बन्ध में हम कुछ विद्वानों के विचारों को उद्धृत कर रहे हैं, यथा-

1. ऐडलर-"**बालक के जन्म के कुछ माह बाद ही यह निश्चित किया जा सकता है कि जीवन में उसका क्या स्थान है**।"

"One can determine how a child stands in relation to life a few months after his birth"

-Adler, Quoted by Valentine (p. 504)

2 स्ट्रैग-"जीवन के प्रथम दो वर्षों में बालक अपने भावी जीवन का शिलान्यास करता है। यद्यपि किसी भी आयु में उसमें परिवर्तन हो सकता है, पर प्रारम्भिक प्रवृत्तियाँ और प्रतिमान सदैव बने रहते हैं"। During the first two years of life, the child lays the foundation for his future, Although change is possible at any age, early trends and patterns tend to persist."

-Strang (p. 51)

3. गुडएनफ-**"व्यक्ति का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा तीन वर्ष की आयु तक हो जाता है**।"

"One-half of an individual's ultimate mental stature has been attained by the age of three year

Goodenough (pp. 467-468)